International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उपनिषद् साहित्य

(शालिनी जोशी)

उप व नि उपसर्ग षद्लृ धातु क्विप् प्रत्यय उपनिषद् शब्द बनता है। सद् धातु का अर्थ है विशरण, गति और अवसादन । उप= समीप , नि= निष्ठा से , सद= तत्वज्ञान के लिए गुरु के समीप बैठना । उपनिषद् ब्रह्मविद्या से संबंधित अस्त्र से परिपूर्ण वह शास्त्र है जिससे मनुष्य की चेतना में उसकी हृदय में उत्पन्न विकारों को दूर कर सकता है वस्तुत उपनिषद् ग्रंथो का विषय ब्रह्म है , इसलिए उपनिषद् ग्रंथो को ब्रह्म विद्या के नाम से भी जाना जाता है। उपनिषद् का अन्य नाम वेदांत भी है। वैदिक साहित्य में वेद ,ब्राह्मण, आरणयक, उपनिषद् सम्मिलित है जिसमें उपनिषद् अंतिम है। अतः उपनिषद् को वेदांत नाम से भी जाना गया है अथवा ज्ञान अर्जन का अंतिम ज्ञान जिससे प्राप्त होता है वह वेदांत है।

उपनिषद् साहित्य में अनेक उपनिषद् प्राचीन विवरण अनुसार मिलते हैं चारों वेदों में 1180 उपनिषद् है। ऋग्वेद में 21 यजुर्वेद में 101 सामवेद में हजार और अथर्ववेद में 50 उपनिषद है उपनिषदों की संख्या में अनेक मत है कोई 108 मानता है कोई12, कोई10 मानता है किंतु 10 उपनिषद् को ही प्रामाणिक माना गया है।

ईशकेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरः।।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ।।

ईशावास्योपनिषद् , केनोपनिषद् , कंठोपनिषद् , प्रश्नोंपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैतिरीयोनिषद्, ऐतरयोपनिषद् , छान्दोग्योपनिषद् ,वृहदारण्यकोपनिषद् ,।। किन्तु 12 उपनिषद् प्रमाणिक वाले श्वेताश्वरोपनिषद् और कौषीतकी उपनिषद् भी मानते हैं । पूर्व दश उपनिषदो पर शंकराचार्य ने भाष्य लिखे है। इसलिए इन उपनिषदो का प्रमाणिक माना गया है।

ईशावास्योपनिषद् :-

यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद की मध्यानन्दि शाखा का 40 वा अध्याय है। इसमें 18 अध्याय हैं। यह प्रथम उपनिषद् है। इसके अनुसार संपूर्ण जगत ब्रह्ममय है।

ईशावास्योपनिषद् में ब्रह्म लिए कहा है :

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदसर्वस्यास्य बाह्यतः।।

इस उपनिषद् में त्यागवृति का उपदेश, आत्मस्वरूप , आत्माज्ञानहीन की निन्दा, आत्मनिरूपण , विद्या व अविद्या

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उपासना, सम्भूति व असम्भूति की उपासना , उपासक की याचना का व्यापक वर्णन है।

ईशावास्योपनिषद् को वाजसनेय संहिता उपनिषद् भी कहा जाता है। शुक्लयजुर्वेद के 40 अध्याय में 17 मंत्र वजसेयनी (माध्यन्दिन) शाखा तथा काण्व संहिता अनुसार 18 मंत्र है। इस उपनिषद का नामकरण इसके प्रथम श्लोक से हुआ है :-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

केनोपनिषद् :-

यह उपनिषद् सामवेद का है। इसमें चार खंड है। प्रथम खंड में ब्रह्म व निर्गुण ब्रह्म के बीच का अन्तर बताया गया है। दूसरे खंड में ब्रह्म के रूप का चित्रण। तीसरे व चतुर्थ खंड में उमा हेमवती आख्यान एव परब्रह्म की शक्ति व देवताओं की क्षीण शक्ति का विशिष्ट प्रकार का हिस्सा है। इसलिए इसे तवलकारोपनिषद् भी कहते है। इस उपनिषद् का आरम्भ " केनेषितं पतति" से हुआ है।

कठोपनिषद् :-

यजुर्वेद के कृष्णयजुर्वेद की कंठ शाखा का उपनिषद् है। इसमें 2 अध्याय है तथा इन दो अध्यायो की तीन – तीन वल्लिया इसमें 119 मंत्र है।

कठोपनिषद् में वाजश्वा पुत्र नचिकेता तथा यम के बीच हुए संवाद का वर्णन हैं। इसमें आत्मा के रहस्य की बात की गई हैं। इसमें श्रेय व पेय मार्ग के बारे में उनके फल के बारे में बताया गया है ।

"आत्मारहस्ययोपेतान्मपदार्थान् प्रज्ञावतां पुर: परिष्करोति" कठोपनिषद् को प्राचीन पद्योपनिषद भी माना जाता हैं यह अद्वैत तत्व पर आधारित है।

प्रश्नोपनिषद् :-

यह उपनिषद् अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण का है। इसमें कुल 2 भाग है जिनके 6 खण्ड है। प्रत्येक खण्ड में एक एक प्रश्न छ: ऋषियों द्वारा महर्षि पिप्लाद से किए तथा

महर्षि पिप्लाद द्वारा उनको समुचित उत्तर दिये

1. ऋषि कबंधी
2. विदर्भ देशीय भागर्व
3. अश्वालयन ऋषि
4. सौरायर्णी ऋषि
5. सत्यकामा
6. भारद्वाज पुत्र सुकेश ने प्रश्न किया

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रथम प्रश्न सृष्टि का निर्माण किस निश्चित कारण से होता है?

द्वितीय प्रश्न कितनी शक्तियां सृष्टि को सहारा देती है?

तृतीय प्रश्न प्राण कैस उत्पन्न होता है?

चतुर्थ प्रश्न कौनसी इंद्री स्वप्न देखती है और कौनसी सुख अनुभव करती है,ये सब किसमें है?

पंचम प्रश्न ओम् का ध्यान करने से कोनसा लोक प्राप्त होता हैं?

षष्टि प्रश्न आप सोलह कलाओ वाले पुरुष को जानते है?

मुंडकोपनिषद् :-

यह उपनिषद् अथर्ववेदीय उपनिषद् है। इसमें तीन मुंडक प्राप्त होते है। प्रत्येक मुंडको को दो दो भागो में बाटा गया है इसलिए इसमें छ: खण्ड है।

मुंडकोपनिषद् के अनुसार ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया। इसमें वेदांत शब्द का प्रथम उल्लेख है।यह द्वैतवाद का
प्रधान है।

माण्डुक्योपनिषद् :-

यह अथर्ववेद संहिता का उपनिषद् है। इसमे 12 खण्ड है। किन्तु इन 12 वक्यो के द्वारा ही इस उपनिषद् की समाप्ति हो जाती है। यह स्वाल्पकाय उपनिषद् है। लेकिन इसमें सर्वव्यापि ओंकार का गंभीर वर्णन है। आचार्य गौड़पाद ने इस उपनिषद् पर माण्डुक्योपनिषद् लिखी है।

तैतिरीयोपनिषद् :-

यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय संहिता के तैतिरीय आरण्यक अंश है । तैतिरीय आरण्यक में केवल सप्तम , अष्टम,नवम,मंडल ही तैतिरीयोपनिषद् में है। इसमें ब्रम्हा से सम्बंधित रोचक वर्णन है।

इस उपनिषद में तीन भाग हैं। जो वल्लियो में है।

प्रथम वल्लि- शिक्षा वल्लि

द्वितीय वल्लि – बृहानन्द वल्लि

तृतीय वल्लि- भृगु वल्लि

तैतिरीयोपनिषद् में ब्रह्मा के अंतर्गत अद्वैत, सर्वव्यापि व सत् तत्व का विवेचन किया गया है।ब्रह्मा के अतिरिक्त इसमे, गुरु – शिष्य शिष्टाचार , वरुण भृगु संवाद , पंचकोशविवेक का वर्णन है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऐतरयोपनिषद् :-

यह ऋग्वैदीय उपनिषद् है। इस उपनिषद् में तीन अध्याय हैं ।इसमें परमात्मा द्वारा सृष्टि का वर्णन है। आत्मा के तीन जन्म व आत्मा के ज्ञान का वर्णन है। इस उपनिषद् का उद्देश्य साधक को धर्म की बाहरी कर्मकांड से हटाकर अंदर आत्मा की ओर ले जाना है। इस उपनिषद् में "प्रज्ञान ब्रह्मा" जैसे महावाक्य का उल्लेख आया है । यह ऐतरय आरण्यक के चतुर्थ,पंचम, षष्ठ अध्यायों से लिया गया है।

छान्दोग्योपनिषद् :-

यह सामवेद का हिस्सा है।छान्दोग्योपनिषद् अत्यंत प्राचीन व अत्यंत प्रसिद्ध है । इसमें 8 अध्याय है। सभी उपनिषदों से सर्वाधिक है ।यह उपनिषद् ओम को सर्वाधिक ऊंचे गाए जाने वाले उद्गीत के बारे में चर्चा करता है ।जीवन, मन, अध्यात्म का वर्णन तथा सत्य आत्मा तथा सृष्टि के आधार के बारे में चर्चा करता है।

इसके तृतीय अध्याय में- "सर्व खल्विदं ब्रह्म "

षष्ठ अध्याय में – "तत्वमसि "

सप्तम अध्याय में- सन्त्कुमार द्वारा नारद को उपदेश " यो वो तदमृतम् " "अथ यदल्पम् तन्मत् -र्यम् " अत्यंत लोकपकारि उक्ति है। इसे "आत्मेवेदम

सर्वस्म "कहा गया है।

इसे 14 भागों में विभक्ति किया गया है इसमें ओमकार का स्वरूप, सूर्य उपासना ,गायत्री वर्णन और अण्ड से सूर्य उत्पत्ति ,रैक्व के दार्शनिक तत्व, सत्य सत्यकामजाबल कथा, आत्मा वर्णन इंद्र विरोचन आख्यान आदि हैं।

बृहदारण्यकोपनिषद् :-

इसमें तीन कांड 6 अध्याय हैं । यह शुक्ल यजुर्वेद का विशाल ग्रंथ है। यह उपनिषद् याज्ञवल्क्य की आध्यात्मिक दार्शनिक शिक्षा से ओत – प्रोत है। इसमें ब्रह्मा व आत्मा का प्रयोग एक के भाव को प्रधानता के साथ बताया है यह है ।शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण का हिस्सा है ।इसमें कल 6 अध्याय हैं ।

"अयमात्मा ब्रह्मा"अर्थात यह है आत्मा ही ब्रह्म है।

इसमें सृष्टप्रक्रिया,मृत्यु ,प्राण ,गार्गय-अज्ञात शत्रु संवाद, याज्ञवल्क्य मैत्रयी संवाद, जनक – याज्ञवल्क्य आख्यान है । परलोक विषयक दार्शनिक विषयों का वर्णन है विविध दर्शनी को का वर्णन है।

इसमें तीन कांड है :-

प्रथम मधु कांड
द्वितीय मुनी कांड

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तृतीय खिल कांड ।।

उपसंहार :-

उपनिषद् साहित्य में तत्वज्ञान के लिए गुरु के समीप बैठकर ज्ञान अर्जन करना है ।आचार्य शंकराचार्य ने उपनिषदों को ब्रह्म विद्या बताया है । उपनिषद् में ज्ञान कांड का विवेचन मिलता है ।उपनिषदों में गुरु के समीप बैठकर तत्व ज्ञान का उपदेश देना ही उपनिषद् बताया है । वैदिक साहित्य में इन 10 प्रमाणिक उपनिषदों के अलावा भी श्वेताशवरोपनिषद् , कोषितकी उपनिषद, वाष्कलोपनिषद् , छांदोग्योपनिषद इत्यादि भी है।